ॐ नमःशिवाय.

प्रजापतियोंद्वारा की गयी भगवान् शिवजी की स्तुती

देवदेव महादेव भुतात्मन् भूतभावन | पाहि नः शरणापन्नांस्त्रैलोक्यदहनाद् विषात् ||8 -7-21||

देवताओंके आराध्यदेव महादेव! आप समस्त प्राणियोंके आत्मा और उनके जीवनदाता हैं | हमलोग आपकी शरणमें आये हैं | त्रिलोकीको भस्म करनेवाले इस उग्र विषसे आप हमारी रक्षा कीजिये |

त्वमेकः सर्वजगत ईश्वरो वन्धमोक्षयोः | तं त्वामर्चन्ति कुशलाः प्रपन्नार्तिहरं गुरुम् ||8 -7-22||

सारे जगतको बांधने और मुक्त करनेमें एकमात्र आप ही समर्थ हैं | इसलिये विवेकी पुरुष आपकी ही आराधना करते हैं | क्योंकि आप शरणागतकी पीडा नष्ट करनेवाले एवं जगद्गुरु हैं |

गुणमय्या स्वशक्त्यास्य सर्गस्थित्यप्ययान्विभो | धत्से यदा स्वदृग् भूमन्ब्रह्मविष्णुशिवाभिधाम् ||8 -7-23||

प्रभो! अपनी गुणमयी शक्तिसे इस जगत्की सृष्टि, स्थिति, और प्रलय करनेके लिये आप अनन्त, एकरस होनेपर भी ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि नाम धारण कर लेते हैं |

त्वं ब्रह्म परमं गुह्यं सदसभ्दावभावनः | नानाशक्तिभिराभातस्त्वमात्मा जगदीश्वरः ||8 -7-24||

आप स्वयंप्रकाश हैं | इसका कारण यही है कि आप परमरहस्यमय ब्रह्मतत्व हैं | जितने भी देवता, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सत् अथवा असत् चराचर प्राणी हैं - उनको जीवनदान देनेवाले आप ही हैं | आपके अतिरिक्त सृष्टि भी और कुछ नही हैं; क्योंकि आप आत्मा हैं | अनेक शक्तियोंके द्वारा आप ही जगत्रूपमें भी प्रतीत हो रहे हैं; क्योंकि आप ईश्वर हैं, सर्वसमर्थ हैं |

त्वं शब्दयोनिर्जगदादिरात्मा | प्राणेन्द्रियद्रव्यगुणस्वभावः ||
कालः क्रतुः सत्यमृतं च धर्मस्त्वय्यक्षरं यत् त्रिवृदामनन्ति ||8 -7-25||

समस्त वेद आपसे ही प्रकट हुए हैं | इसलिये आप समस्त ज्ञानोंके मूलस्त्रोत स्वतः सिद्ध ज्ञान हैं | आप ही जगत्के आदिकारण महत्तत्त्व और त्रिविध अहंकार हैं एवं आप ही प्राण, इन्द्रिय, पञ्च महाभूत तथा शब्दादि विषयोंके भिन्न भिन्न स्वभाव और उनके मूल कारण हैं | आप स्वयं ही प्राणियोंकी वृद्धि और ह्रास करनेवाले काल हैं, उनका कल्याण करनेवाले यज्ञ हैं एवं सत्य और मधुर वाणी हैं | धर्म भी आपका स्वरूप हैं | आप ही "अ, उ, म्"- इन तीन अक्षरोंसे युक्त प्रणव हैं अथवा त्रिगुणात्मिका प्रकृति हैं - ऐसा वेदवादी महात्मा कहते हैं |

|| श्रीशिवस्तुति ||

श्रीगणेशायनमः |

कैलासराणा शिवचन्द्रमौळी | फणींद्र माथां मुकुटी झळाळी || कारुण्यसिंधू भवदुःखहारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१‖ रवींदु दावानल पूर्ण भाळीं | स्वतेज नेत्रीं तिमिरौघ जाळी ‖ ब्रह्मांडधीशा मदनांतकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२‖ जटा विभूती उटि चंदनाची | कपालमाला प्रित गौतमाची ‖ पंचानना विश्वनिवान्तकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||३‖ वैराग्ययोगी शिवशूलपाणी | सदा समाधी निजबोधवाणी || उमानिवासा त्रिपुरान्तकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||४‖ उदार मेरू पति शैलजेचा | श्री विश्वनाथ म्हणती सुरांचा ‖ दयानिधी जो गजचर्मधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ ५‖ ब्रह्मादि वंदी अमरादिनाथ | भुजंगमाला धरी सोमकान्त ‖ गंगा शिरीं दोष महा विदारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||६‖ कर्पुरगौरी गिराजा विराजे | हळाहळें कंठ निळाच साजे ‖ दारिद्रयदुःखे स्मरणें निवारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||७‖ स्मशानक्रीडा करितां सुखावे | तो देवचूडमणि कोण आहे ‖ उदासमूर्ती जटाभस्मधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||८‖ भूतादिनाथ अरि अन्तकाचा | तो स्वामि माझा ध्वज शांभवाचा ‖ राजा महेश बहुवाहुधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||९‖ नंदी हराचा हर नंदिकेश | श्रीविश्वनाथ म्हणती सुरेश ‖ सदाशिव व्यापक तापहारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१०‖ भयानक भीम विक्राळ नग्न | लीलाविनोदें करि काम भग्न ‖ तो रुद्र विश्वंभर दक्ष मारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||११‖ इच्छा हराची जग हें विशाळ | पाळी रचि तो करि ब्रह्मगोळ ‖ उमापति भैरव विघ्नहारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१२‖ भागीरथी तीर सदा पवित्र | जेथें असे तारक ब्रह्ममंत्र ‖ विश्वेश विश्वंभर त्रिनेत्रधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१३‖ प्रयाग वेणी सकळा हराच्या | पादारविंदीं वहाती हरीच्या ‖ मंदाकिनी मंगल मोक्षकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१४‖ कीर्ति हराची स्तुति बोलवेना | कैवल्यदाता मनुजां कळेना ‖ एकाग्रनाथ विष अंगिकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१५‖ सर्वान्तरी व्यापक जो नियन्ता | तो प्राणलिंगाजवळी महंता ‖ अंकी उमा ते गिरीरूपधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी‖ १६‖ सदा तपस्वी असे कामधेनू | सदा सतेज शशि कोटिभानू || गौरीपती जो सदा भस्मधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ १७‖

Shridhar Alurkar shrinila@sancharnet.in

कर्पूरगौरा स्मरल्या विसांवा | चिंता हरी जो भजकां सदैवा ‖ अंति स्वहित सूचना विचारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ १८‖ विरांमकाळीं विकळ शरीर | उदास चित्तीं न धरीच धीर ‖ चिन्तामणी चिंतने चित्त हारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||१९‖ सुखावसानें सकळें सुखाची | दुःखावसानें टळती जगाचीं ‖ देहावसानें धरणी थरारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२0‖ अनुहातशब्द गगनीं न माय | त्याचेनि नादें भव शून्य होय ‖ कथा निजांगे करुणा कुमारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२१‖ शांति स्वलीला वदनीं विलासे | ब्रह्मांडगोळीं असूनी न दिसे ‖ भिल्ली भवानी शिवब्रह्मचारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ २२‖ पीतांबरें मंडित नाभी ज्याची | शोभा जडीत वरी किंकिणीची ‖ श्रीदेवदत्त दुरितांतकारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ २३‖ जिवाशिवाची जडली समाधी | विटला प्रपंच तुटली उपाधी ‖ शुद्धस्वरें गर्जति वेद चारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ २४‖ निधानकुंभ भरला अभंग | पहा निजांगे शिवज्योतिर्लिंग ‖ गंभीर धीर सुरचक्रधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ‖ २५‖ मंदार बिल्वे वकुलें सुवासी | माला पवित्र वहा शंकरासी || काशीपुरी भैरव विश्व तारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२६‖ जाईजुई चंपक पुष्पजाती | शोभा गळां मालतिमाल हातीं ‖ प्रतापसूर्य शरचापधारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२७‖ अलक्ष्यमुद्रा श्रवणी प्रकाशे | संपूर्ण शोभा वदनीं विकासे ‖ नेंई सुपंथे भवपैलतीरीं | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२८‖ नागेशनामा सकळा जिव्हाळां | मना जपें रे शिवमंत्रमाळा ‖ पंचाक्षरी ध्यान गुहा विहारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||२९‖ एकांती ये रे गुरुराज स्वामी | चैतन्यरूपी शिव सूखनामीं ‖ शिणलों दयाळा बहुसाल भारी | तुजवीण शंभो मज कोण तारी ||३0||

शास्त्राभ्यास नको श्रुती पढुं नको तीर्थासि जाऊं नको |
योगाभ्यास नको व्रतें मख नको तीव्रें तपे ती नको ||
काळाचे भय मानसीं धरूं नको दुष्टासि शंकूं नको |
ज्याचीया स्मरणें पतीत तरती तो शंभु सोडूं नको ||३१||

| श्री सांबसदाशिवार्पणमस्तु ‖ शुभं भवतु ||

संदर्भः श्रीशिवलीलामृत .

Shridhar Alurkar shrinila@sancharnet.in